18

I nopu

प्रिय शिक्षार्थी, पिछले पाठ में आपने जन्मदिवस पर होने वाली गतिविधियों को संस्कृत वाक्य में प्रयोग करना सीखा। इस पाठ में आप सदाचार से संबंधित श्लोकों का अध्ययन करेंगे। अच्छा आचार–विचार ही मनुष्य को महान बनाता है।

mÌ’;

यह पाठ पढने के बाद आप सक्षम होंगे:

- संस्कृत श्लोकों का उच्चारण कर पाने में; और
- जीवन में नैतिक विचारो का महत्त्व समझ पाने में।

d{kk & V

fVIi.kh

18.1 eyikB

1. iLrdLFkkr ;k fo|kijgLrxr /kue
dk;ZdkysleRiUus u lkfo|k u r)ue AA 1AA

HkkokFk% किताबों के अन्दर छुपा ज्ञान तथा हमारे पास संचित धन का तब तक कोई अर्थ नही जब ये मुश्किल समय पर हमारे काम न आयें।

2. fi;okD;inkusu los rq"; fUr tUro%A
rLekr fi;fgoDr0;e opus dk nfjnrk AA 2AA

HkkokFk% नम्रता के साथ बात करने वाले व्यक्ति के सभी मित्र बन जाते हैं। नम्रता के साथ बोलने में गरीबी क्यों दिखाई जानी चाहिए। इसलिए सबके साथ प्यार से बात करनी चाहिए।

3. Hkwe% xjh;lhekrk] Loxkn mPprj% firkA
tuuhtUeHkfe'p] Loxknfi xjh;lh AA 3AA

HkkokFk% मातृभूमि से माता बड़ी होती है, पिता स्वर्ग से बडे होते हैं परन्तु माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढकर होते है।

Inopu

fVIi.kh

4. mRlo0;luikIr] nfHk{k 'k=qladVA
jkt}kj 'e'kkfu p] ;fLr"Bfr l cU/ko% AA 4AA

HkkokFk% एक सच्चा मित्र वह होता है जो उत्सव, व्यसन, अकाल, शत्रुसंकट, कानूनी मुश्किल में (राजद्वार में), अंत्येष्टि आदि में हमेशा आपके साथ खड़ा रहता है।

5. J;rk /keZ loLo] JRokpkO;o/k;rkeA
vkReu% ifrdwykfu ijs"kka u lekpjsr AA 5AA

HkkokFk% सभी धर्मों को ध्यान से सुनना चाहिए और मन में धारण कर लेना चाहिए कि जो कार्य आपके स्वयं के लिए ठीक नहीं है, वैसा दूसरों के साथ नही करना चाहिए। यहीं सभी धर्मो का सार है।

Þlo/keZ leHkkoß
Þo lq/ko dqVqEcdeß

ikBxr iz'u& 18-1

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(i) .... तु या विद्याापरहस्तगतं धनम्

(ii) .... सर्वेतुश्यन्तिजन्तवः।

(iii) भूमेः .... माता, स्वर्गाद् उच्चतरः पिता।

(iv) उत्सवेव्यसनेप्राप्ते, दुभिक्षे ....।

(v) आत्मनः .... परेषां न समाचरेत्।

vkius D;k lh[kk\

- नैतिक विचार।
- संस्कृत भाषा के नवीन शब्द।

ikBkr iz'u

1. नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर दीजिये –

1. सच्चा मित्र कैसा होता है ?

2. हमें नम्रता की बात क्यों करनी चाहिए?

3. सभी धर्मों का सार क्या है?

mÙkjekyk

18.1

(i) पुस्तकस्था

(ii) प्रियवाक्यप्रदानेन

(iii) गरीयसी

(iv) शत्रुसंकटे

(v) प्रतिकूलानि